1

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
साप्ताहिक
आर्य सन्देश
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

यत्र सोमः सदमित्तग भद्रम्।

अथर्व. 7/18/2

जहां शान्तिवर्षक परमात्मा है वहां सदा ही कल्याण है।

Wherever is the divine bestower of peace, there is plenty of prosperity & happiness.

वर्ष 40, अंक 5 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 28 नवम्बर, 2016 से रविवार 4 दिसम्बर, 2016
विक्रमी सम्वत् 2073 सृष्टि सम्वत् 1960853117
दयानन्दाब्द : 193 वार्षिक शुल्क : 250 रुपये पृष्ठ 4
फैक्स : 23365959 ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें – www.thearyasamaj.org/aryasandesh

बांग्लादेश और हिन्दुओं का भविष्य

खबर है कि अब बांग्लादेश देश से हिन्दू पलायन कर रहे हैं। हालाँकि हिन्दुओं के पलायन की यह कोई नई खबर नहीं है। कभी पाकिस्तान से पलायन तो कभी कश्मीर और कैराना से पलायन कर रहे हैं। हाल ही में ढाका यूनिवर्सिटी के प्रोफेसर डॉ. अब्दुल बरकत ने अपनी किताब में लिखा है कि अगर बांग्लादेश से इसी प्रकार हिन्दुओं का पलायन होता रहा तो अगले 30 साल में बांग्लादेश में एक भी हिन्दू नहीं बचेगा। अब्दुल बरकत के अनुसार औसतन 632 हिन्दू रोजाना बांग्लादेश छोड़ रहे हैं। दैनिक ट्रिब्यून की रिपोर्ट में प्रोफेसर बरकत के हवाले से कहा गया है कि अगले तीन दशक में बांग्लादेश में एक भी हिन्दू नहीं बचेगा। हालाँकि उन्होंने साथ ही हिन्दुओं की धार्मिक भावनाओं पर स्नेहलेप करते हुए कहा कि बांग्लादेश में हिंदुओं पर हमले हो रहे हैं। ऐसे में हर विवेकशील बांग्लादेशी नागरिक को उनकी हिफाजत के लिए उठ खड़ा होना चाहिए।

यह एक घटना नहीं है, न ही किसी एक देश की कहानी। यह वह दर्द है जो पड़ोसी देशों में रहकर एक अल्पसंख्यक हिन्दू हर रोज सहता है। धार्मिक कट्टरपंथी समाज के बीच विभाजन के बीज बो रहे हैं जिनसे अल्पसंख्यक समुदायों को कटघरे में खड़ा किया जा सके। भारत में हर एक साम्प्रदायिक घटना के बाद सेकुलर समुदाय चिंतित होकर विश्व समुदाय से न्याय की गुहार लगाता दिखाई दे जाता। चाहे वह महाराष्ट्र विधानसभा के अन्दर एक मुस्लिम समुदाय के युवक को रमजान के महीने में रोटी खिलाना ही क्यों न हो परन्तु जब बात पड़ोसी देशों या भारत के अन्दर किसी राज्य में अल्प संख्यक हिन्दू की आती है तो इन लोगों की जुबान पर ताला लटका दिखाई दे जाता है। पाकिस्तान, अफगानिस्तान और बांग्लादेश में रह रहे अल्पसंख्यक समुदाय की लगातार बिगड़ती सामाजिक – आर्थिक स्थिति की जानकारी दुर्दशा और उनके मानवाधिकारों के हनन देखें तो 1947 में पाकिस्तान में हिंदुओं की आबादी 20 फीसदी थी जो घटकर अब सिर्फ दो फीसदी रह गई है। पाकिस्तान से बांग्लादेश स्वतंत्र होने के बाबजूद भी यह सिलसिला जारी रहा क्योंकि बांग्लादेश में 1981 में यह संख्या 12.1 प्रतिशत रह गई थी लेकिन 2011 के आंकड़ों के मुताबिक हिन्दुओं की आबादी मात्र 8.5 प्रतिशत रह गई है और बची-खुची हिन्दू आबादी भी भारत में ही आकर बसना चाहती है।

.....अब्दुल बरकत के अनुसार औसतन 632 हिन्दू रोजाना बांग्लादेश छोड़ रहे हैं। दैनिक ट्रिब्यून की रिपोर्ट में प्रोफेसर बरकत के हवाले से कहा गया है कि अगले तीन दशक में बांग्लादेश में एक भी हिन्दू नहीं बचेगा। हालाँकि उन्होंने साथ ही हिन्दुओं की धार्मिक भावनाओं पर स्नेहलेप करते हुए कहा बांग्लादेश में हिंदुओं पर हमले हो रहे हैं। ऐसे में हर विवेकशील बांग्लादेशी नागरिक को उनकी हिफाजत के लिए उठ खड़ा होना चाहिए।....

बंगलादेश में हिन्दुओं की लगातार हो रही हत्याओं के विरोध में ढाका में प्रदर्शन

इस्लामी देशों की तो बात छोड़िए, हिंदुस्तान में ही ऐसे अनेक राज्य और स्थान हैं जहां हिन्दुओं पर अत्याचार होते हैं। उन्हें अपनी बेटी, बहुओं की इज्जत के साथ घर-परिवार भी छोड़ना पड़ता है लेकिन किसी भी दल का कोई भी ढोंगी धर्मनिरपेक्षतावादी इस विषय पर अपना मुंह नहीं खोलता। उत्तर प्रदेश के मुस्लिम बाहुल इलाकों, कश्मीर, केरल, तमिलनाडु और बंगाल के एक बड़े हिस्से में ऐसा होता रहा है लेकिन वोटों के लालच में कोई दल या नेता इसके खिलाफ आवाज नहीं उठाता।

कभी बांग्लादेश की नींव भी भारत की तरह धर्मनिरपेक्ष सिद्धांतों पर रखी गई थी। वहां की आजादी के लिए हिन्दुओं के बलिदान कम नहीं थे। मुस्लिमों के साथ आजादी की लड़ाई और इकट्ठा जश्न मनाने के बाद आज समय के साथ वहां की राजनीति और नैतिक सिद्धांतों पर कट्टरपंथी हावी हो गये। मुस्लिम बाहुल बांग्लादेश में भी अल्पसंख्यकों को धर्मनिरपेक्षता का पाठ पढ़ाया जा रहा है लेकिन इसका तरीका पूरी तरह से मुस्लिम है, जैसा कि मुस्लिम देशों में गैर-मुस्लिमों के साथ होता है। वास्तव में ऐसे देशों में हिंदुओं और उनकी लड़कियों, महिलाओं को बाजारू सामान से भी गया गुजरा समझा जाता है। अक्टूबर, 2001 जब पूर्णिमा रानी के घर पर करीब 30 लोगों ने हमला किया। उनका कुछ लोगों से जमीन को लेकर विवाद था, जिसकी कीमत मासूम पूर्णिमा ने चुकाई। हमलावरों ने माता-पिता के सामने ही पूर्णिमा को हवस का शिकार बनाया था। मुझे आज यह वाक्या लिखने में शर्म आ रही है किन्तु इन तथाकथित धर्मनिरपेक्ष चोले में बैठे लोगों के कानों

– शेष पृष्ठ 4 पर

90 वाँ स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस

शोभायात्रा

रविवार 25 दिसंबर 2016

यज्ञ :- प्रातः 8.00 से 9.30 बजे तक

स्थान :- स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान भवन, नया बाजार, दिल्ली

भव्य शोभायात्रा का प्रारम्भ प्रातः 10 बजे

विशाल सार्वजनिक सभा

समय : दोपहर 1.00 से 4.00 बजे तक स्थान : रामलीला मैदान, अजमेरी गेट, नई दिल्ली - 2

अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द के बलिदान दिवस पर हजारों की संख्या में पहुंचकर संगठन का परिचय दें।

नोट : ऋषि लंगर की व्यवस्था सभा की ओर से रहेगी।

आर्य केन्द्रीय सभा (दिल्ली राज्य), 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001

(नोट : अपने वाहनों को पीली कोठी की ओर से लाने में आपको सुविधा होगी।)

लो फिर आ गया विश्व पुस्तक मेला : 7 से 15 जनवरी, 2017

आर्यसमाज बढ़-चढ़ कर करेगा वैदिक साहित्य का प्रचार-प्रसार

स्टाल पर समयदान करने वाले सहयोगी कार्यकर्ता अपने नाम श्री सुरेन्द्र चौधरी जी मो. 9212066425 को नोट कराएं।

वेद-स्वाध्याय

उत्तम गुण मुझमें आएं

यज्ञस्य चक्षुः प्रभृतिर्मुखं च वाचा श्रोत्रेण मनसा जुहोमि।
इमं यज्ञं विततं विश्वकर्मणा देवा यन्तु सुमनस्यमानाः।। अथर्व० 2/35/5
ऋषिः अङ्गिराः।। देवता : **विश्वकर्मा**।। छन्दः **भुरिक्त्रिष्टुप्**।।

शब्दार्थ - यज्ञस्य= मनुष्य-जीवन-यज्ञ के **प्रभृतिः**= भरण-पोषण का साधन **चक्षुः**=दर्शनशक्ति है **मुखं च**=और मुख भी है। **वाचा श्रोत्रेण मनसा**=वाणी से, कान से और मन से **जुहोमि**=मैं हवन ही करता हूँ। **इमम् यज्ञम्**=यह मेरा जीवन-यज्ञ **विश्वकर्मणा**= जगद्रचयितापरमात्मा ने **विततम्**=विस्तृत किया है, इसमें **देवाः**=सब देव, दिव्यभाव **सुमनस्यमानाः** = प्रसन्न होते हुए **आ यन्तु**=आएँ।

विनय-मेरे जीवन-यज्ञ का भरण-पोषण करनेवाली मेरी दर्शनशक्ति है। इससे नित्य नया सत्यज्ञान पाता हुआ मेरा मनुष्य-जीवन उन्नत होता जा रहा है। इस यज्ञ का साधनभूत जो मेरा स्थूल शरीर है, उसका भरण-पोषण मुँह द्वारा अन्न ग्रहण करने से हो रहा है, पर मेरा यह सब मानसिक और शारीरिक पोषण यज्ञ के लिए ही है। मैं उन्नत हुए मन से, शरीर से, इन्द्रियों से जो कुछ करता हूँ वह सब हवन ही करता हूँ। वाणी से जो बोलता हूँ वह हवन ही करता हूँ; ऐसा कुछ नहीं बोलता जो प्रभु को साक्षी रखकर नहीं होता, जोकि अन्यों का हितकर नहीं होता। कानों से जो सुनता हूँ वह प्रभु-अर्पण-बुद्धि से सुनता हूँ; वह श्रेष्ठ पवित्र ही श्रवण करता हूँ, जो फलतः सर्वभूतहित के लिए हो। इसी प्रकार मन के भी एक-एक मनन-चिन्तन को ऐसा पवित्र, निर्विकार, हवनरूप करने का यत्न करता हूँ। मैं सदा स्मरण रखता हूँ कि यह मनुष्य-जीवन मुझे विश्वकर्मा प्रभु ने यज्ञ रूप करके दिया है। मुझे यह ध्यान रहता है कि यह जीवन यज्ञ उस प्रभु का आरम्भ किया हुआ, चलाया हुआ है। जिस यज्ञस्वरूप ने यह सब विश्व-ब्रह्माण्ड रचा है, उसी विश्वकर्मा ने अपने इस विश्व में मेरा यह छोटा-सा जीवनयज्ञ भी शतवर्ष तक चलने के लिए प्रारम्भ किया है। यही विचार है जो मुझे अपने एक-एक कर्म को संयमपूर्ण, पवित्र और त्यागमय बनाने को प्रेरित करता है। मैं सचिन्त और सावधान रहता हूँ कि कहीं यह विश्वकर्मा का विस्तृत किया हुआ पवित्र यज्ञ मेरे किसी कर्म से कभी भ्रष्ट न हो जाए। इसलिए, हे देवो! प्रभु के संसार-यज्ञ को चलाने वाली दिव्य शक्तियो! तुम मेरे इस यज्ञ में भी प्रसन्नचित्त होकर आओ और इसे अधिक-अधिक यज्ञिय, पवित्र बनाओ। तुम्हारा तो कार्य ही यज्ञ में आना है, अतः हे दिव्य गुणो! तुम मुझमें आओ, प्रसन्नचित्त होकर आओ। मैं अपने जीवन को यज्ञ बनाता हुआ तुम्हें बुला रहा हूँ, अतः हे यज्ञप्रिय दैवभावो! तुम प्रसन्नतापूर्वक मुझमें वास करो। देवों के सब गुण, सब देवभाव, सब देवत्व मुझमें आ जाएँ, स्वभावतः मुझमें आ जाएँ, मुझमें बस जाएँ।

साभार : वैदिक विनय।

वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

सम्पादकीय

असम-नागालैंड में आयोजित जनजातीय वैदिक महासम्मेलन के मायने

19-20-21 नवम्बर को सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा असम नागालैंड की भूमि पर विराट जनजातीय वैदिक महासम्मेलन की सफलता आर्य समाज के इतिहास में अपनी एक अलग अमिट छाप छोड़ गयी। अक्तूबर महीने में नेपाल आर्य महासम्मेलन की सफलता के बाद इसे आर्य समाज का एक साहसिक कदम कहा जाना चाहिए। साहसिक कदम इसलिए क्योंकि जिस राज्य में 87 फीसदी से ज्यादा ईसाई मत को मानने वाले लोग हों वह स्थान जो क्षेत्रीय आतंक से त्रस्त हो, जहाँ की खबरें भी भारतीय मीडिया कभी ग्राउंड से लाने की कोशिश नहीं करता ऐसी जगह विराट जनजातीय वैदिक महासम्मेलन कर हजारों की भीड़ जुटाना अपने आप में आर्य समाज का नाम इंद्रधुनष के बराबर में लिखने जैसा है। वैसे तो आर्य समाज अपनी स्थापना से ही लगातार समाज सुधार के कार्यों से लेकर आजादी तक सबसे अग्रणी भूमिका में रहा, आर्य समाज के कार्यों की कोई तुलना नहीं की जा सकती लेकिन सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा पूर्वोत्तर राज्यों में देव दयानन्द के शिक्षा के मिशन को आगे बढ़ाते हुए जो कार्य किया वह अतुलनीय है। यदि ये कार्य आज से 50 साल पहले होता तो आज सांस्कृतिक, धार्मिक और सामाजिक रूप से पूर्वोत्तर राज्यों की यह हालत न होती बहरहाल आर्य समाज की यह दस्तक किसी क्रांति से कम नहीं है।

दीमापुर प्राकृतिक रूप से बहुत खूबसूरत होने के साथ-साथ एक ऐतिहासिक शहर भी है। दीमापुर नाम का एक और अर्थ भी निकाला जाता है यह तीन शब्दों दी, मा और पुर से मिलकर बना है। कचारी भाषा के अनुसार 'दी' का अर्थ होता है नदी, 'मा' का अर्थ होता है महान और 'पुर' का अर्थ होता है शहर। असम और नागालैंड के घने जंगलों के बीच जहाँ चारों और दूर-दूर तक आदिवासी जनजाति के लोग रहते है; ऐसी जगह सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने आगे बढ़कर यहाँ के जनजातीय समुदाय के बीच पहुंचकर दयानन्द आर्य विद्या निकेतन के नाम से एक भव्य भवन यहाँ के समुदाय की शिक्षा के लिए खोला। यहाँ पारंपरिक रूप से जंगल और वन-भूमि ही जनजातीय लोगों का आश्रय स्थल है और जीविकोपार्जन का माध्यम भी है। यहाँ एक लोककथा प्रचलित है कि इस जगह महाभारत काल में हिडिंबा राक्षस और उसकी बहन हिडिंब रहा करते थे। यहीं पर हिडिंब ने भीम से विवाह किया था। यहां बहुलता में रहने वाली डिमाशा जनजाति खुद को भीम की पत्नी हिडिंब का वंशज मानती है।

आप सब भलीभांति परिचित हैं कि पूर्वोत्तर राज्य किस प्रकार अन्य समुदाय खासकर ईसाइयों के जाल में फंस चुकें हैं? पूर्वोत्तर राज्य ही क्या जिन राज्यों में आर्य समाज के शिक्षण संस्थान/गुरुकुल या जिस राज्य में आर्य समाज अछूता रहा है वहां-वहां अन्य मिशनरियां जबरदस्त कामयाब रहीं जिसका उदाहरण दक्षिण भारत और पूर्वोत्तर राज्य हैं। यहां से हमारी प्राचीन संस्कृति, हमारी धरोहर, हमारा धर्म सब कुछ चौपट किया जा चुका है। महाशय धर्मपाल जी का धन्यवाद देना चाहते हैं जिन्होंने दयानन्द आर्य विद्या निकेतन दीमापुर यह स्कूल वहां के अति पिछड़े-आदिवासी और वनवासी लोगों को समर्पित किया ताकि वहां के गरीब बच्चों को अच्छी शिक्षा व संस्कार उपलब्ध कराए जा सकें। इस दृष्टि से वहां बड़े विद्यालयों का निर्माण कराया जा रहा है। इस कड़ी में अब तक दो विशाल विद्यालय बन चुके हैं तथा उनमें पढ़ाई भी आरम्भ हो चुकी है परन्तु अत्यधिक निर्धन क्षेत्र में स्थित होने के कारण इसके निरंतर संचालन में कुछ मूल समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है। यह विद्यालय जिस क्षेत्र में स्थित है उस पूरे क्षेत्र में इसाई मिशनरीज ने 200 सालों से शिक्षा केंद्र खोलकर लाखों परिवारों को इसाई बना लिया है जिस कारण हिन्दू शिक्षण संस्थान वहां न के बराबर हैं इस बात पर किसी ने समय रहते ध्यान नहीं दिया, न सरकार और न ही किसी हिन्दू संगठन ने जिसका नतीजा यह है कि यदि नागालैंड के दीमापुर शहर को गूगल अर्थ में सर्च करते हैं तो सुमी चाखेसंग चर्च, बेपिस्ट चर्च, लोथा और ओं चर्च समेत न जाने कितने चर्च दिखाई देते हैं। वैदिक सभ्यता व हिन्दू संस्कृति के निशान भारत के इस हिस्से से मिटा से दिए गये हैं। आर्य समाज और अन्य हिन्दू संस्थाओं ने बहुत बाद में इन क्षेत्रों में शिक्षा का कार्य आरम्भ किया किन्तु अब बहुत देर हो चुकी है। इसके बाद भी आर्य समाज को विश्वास है कि यदि आप सभी का सहयोग मिला तो यह कार्य कठिन तो है पर असंभव नहीं है। आज हम केवल अपने आस-पास की सोच रहे हैं, वह भी कितना यह भी विचारने का विषय है वहां की कौन सोचेगा?

हम सब जिस समय में रहते हैं उसके उत्तरदायी हम खुद होते हैं यदि आज हम ऋषि दयानन्द के इस अधूरे कार्य में पीछे हटे तो अगली पीढ़ी द्वारा इसका उत्तरदायी हमें ठहराया जायेगा बिल्कुल उसी तरह जिस तरह हम पिछली पीढ़ी को ठहरा रहे हैं। खैर हमारे कहने का विषय यह था कि इन स्कूलों को खड़ा करने में कुछ बाधाएँ आ रही हैं जैसे ईसाई स्कूलों की फीस काफी कम होना, हम ज्यादा नहीं ले सकते उनके अध्यापक ट्रेंड होना, हमें ट्रेंड अध्यापक काफी महंगे पड़ते हैं। ईसाई मिशनरीज के लगभग 250 स्कूल से अधिक हैं। यदि ग्रामीण क्षेत्रों में उनके 50 स्कूल लाभ में न भी हों तो भी उनका गुजारा चल जाता है। एक विद्यालय भी यदि इस क्षेत्र में मजबूत होता है तो उनके सहारे अन्य विद्यालयों के खुलने और आगे बढ़ने की राह बन जाती है। इसाई संगठनों के कार्य देखकर एक बार तो हमारा विश्वास उड़ गया था कि यहाँ हिन्दुओं के लिए कुछ हो सकेगा! परन्तु कुछ स्थानीय लोगों व आर्यजनों के सहयोग और हिम्मत से यह विश्वास पुनः लौट आया कि आर्य समाज के लिए यहाँ कुछ कार्य हो सकेगा। जनजातीय समुदाय के पारम्परिक और सांस्कृति विरासत बचाने के लिए आर्य समाज ने उन्हें शिक्षित करने का जो बीड़ा उठाया है उसमें व्यापक दृष्टिकोण अपना कर काम करने से ही जनजातीय समुदाय का उत्थान सम्भव है। अन्त में हम आपको बताते चलें कि कभी पूर्व में रहा महाभारत कालीन यह आर्यो का शहर आज इसाइयों का वैटिकन बनकर रह गया। आखिर इसका जिम्मेदार कौन? यदि हमें आर्यो के इस कार्य को आगे बढ़ाना है तो पूर्वोत्तर के सभी राज्यों में शिक्षण संस्थान खोलने पड़ेंगे क्योंकि आज समय है और इसका उत्तरदायित्व भी हम किसी और पर नहीं डाल सकते। अब जिम्मेदारी हमारी है।

- सम्पादक

विराट जनजातीय वैदिक महासम्मेलन-असम एवं नागालैंड : 19-21 नवम्बर, 2016

महासम्मेलन की विस्तृत रिपोर्ट, चित्रमय झांकी एवं संस्मरण अगले अंक में

Islamic Banking in India, Do we need it?

RBI Governor Raghuram Rajan added one more feather in the cap of Muslim appeasement by giving nod for the establishment of Islamic banking in India starting from the state of Kerala. Last governor of RBI never favored Islamic banking and shall we assume that the new joining of our Governor came with a mandatory bond of allowing Islamic banking for our so called Secular UPA Government. It is said that Islamic Banking is as per the principles of Sharia Law and borrowing Interest on loan is considered as an evil. As per Sharia Interest is considered to be "riba" (something excessive) and has to be avoided.

Loan without interest seems an interesting term for many who are in dire need of loans but the truth is something else. It's not like that the bank is never going to charge you any interest but truth is something else. In reality all kinds of funny procedure and practice are adopted in name of Islamic banking. They say that the idea is that the banker and borrower should share the profits and losses! Let us take some examples:

1) In an Islamic mortgage transaction, instead of loaning the buyer money to purchase the item (say a house), a bank might buy the item itself from the seller, and re-sell it to the buyer at a profit, while allowing the buyer to pay the bank in installments. However, the bank's profit cannot be made explicit and therefore there are no additional penalties for late payment. In order to protect itself against default, the bank asks for strict collateral. The goods or land is registered to the name of the buyer from the start of the transaction. You will notice that profits are alright but not "interest"! This is a long-winded way of doing simple things. Virtually how is profit different from interest and overall it's like entry and interruption of bank into the business of a firm with or without its approval.

2) Islamic banks handle loans for vehicles in a similar way (selling the vehicle at a higher-than-market price to the debtor and then retaining ownership of the vehicle until the loan is paid). There are two sales/purchases unnecessarily in the place of one! It seems like a sweet candy with bitter taste.

3) As for home loans, another procedure is that the bank and borrower form a partnership entity, both providing capital at an agreed proportion to cover the value of the property. The partnership entity then rents out the property to the borrower and charges rent. The bank and the borrower will then share the proceeds from this rent based on the current equity share of the partnership. At the same time, the borrower in the partnership entity also buys the bank's share of the property at agreed installments until the full equity is transferred to the borrower and the partnership is ended. If default occurs, both the bank and the borrower receive a proportion of the proceeds from the sale of the property based on each party's current equity. I feel that such procedures are very cumbersome and we don't need these.

4) Islamic banks lend their money to companies by issuing floating rate interest loans. The floating rate of interest is pegged to the company's individual rate of return. Thus the bank's profit on the loan is equal to a certain percentage of the company's profits. Once the principal amount of the loan is repaid, the profit-sharing arrangement is concluded. Varying interest rates from borrower to borrower, to me, is simply unthinkable.

5) Islamic banking is restricted to Islamic acceptable transactions, which exclude those involving alcohol, pork, gambling etc. So, shall we conclude that loans for gun-running, suicide bombings, drug-peddling, terrorism etc seems to be permissible as widely prevalent in Islamic countries?

6) Is interest a sin? Absolutely not, any person who had borrowed loan from a bank if bounded by interest will work hard to return it as soon as possible. Any society which has competitive atmosphere progress as it not only increases the human output but also provides better opportunities for customers. If a person is not bounded to return he will not understand the value of money. Interest is appropriate if charged wisely and appropriately and way before Islamic Sharia Code of conduct Manu Smriti defines guidelines for interest which seems quite practical.

Manu smriti 11:151-155 speaks about interest rates limit not more than 5%, renewal of contract after paying all dues, the sum interest should never be more than the original amount in any case.

I think if these guidelines are not even practical but also if honestly followed makes establishment of Islamic banking on our country irrelevant.

7) Uncontrolled unemployment in our country and widespread corruption had lead to lakhs of skilled and semiskilled youths an easy target for luring by unethical means. Everyone is aware of Mahajan never ending Sood quest. When the bank will be partner in individual firm how could anyone escape from the same consuming mentality of lender. The National banks seems more comfortable option for such class as most of time poor fractions of society are excused from the pay back of loans by our politicians for votes. If such incentives are found in religion based banking which follows strict Sharia than anyone can imagine that at the cost of religion a debt ridden party could be easily blackmailed to go free. This will not even cause communal tensions but also destroy the secular thought process of our democracy. It will be not a big saying to say that Islamic banking is a potential danger to our society and its harmony.

8) Even if RBI is so keen in Islamic Banking than why cannot it offer same structure of payment from its own banking structure? Why does it want to introduce unknown funding from Islamic countries in Indian economy through indirect channels? Is not it loss of reputation of our own banks and loss of self reliance of Indian economy?

There are 57 countries which are members of the Organization of Islamic Cooperation (OIC). Luckily India is not a part of this Organization thanks to Pakistan's request to exclude India due to the Kashmir issue. Islamic Banking is prevalent amongst the OIC countries with specific Islamic banks in operation, although not very extensively.

I don't think that at this point of our history we should introduce Islamic banking based on Sharia which is against the secular fabric of our constitution.

Today we opens Islamic banking, tomorrow will we open Christian banking, Jain banking, Sikh banking, Atheist banking etc and that also if we imagine this sort of division in each and every field of society it would be impossible for a country like us to run.

- Dr Vivek Arya

आओ संस्कृत सीखें

संस्कृत पाठ – 17

उप पद द्वितीय विभक्ति

गतांक से आगे....

१.अभित: – चारों ओर
ग्रामम् अभित: क्षेत्राणि सन्ति।
गांव के चारों ओर खेत है।

२.सर्वत: – सब ओर
गृहं सर्वत: उद्यानानि सन्ति।
घर के सब ओर बगीचे हैं।

३.उभयत: – दोनों ओर
नदीम् उभयत: वृक्षाणी सन्ति।
नदी के दोनों ओर पेड़ है।

४.प्रति – ओर
राम: गृहं प्रति गच्छति।
राम घर की ओर जाता है।

५.विना – बिना
त्वां विना अहम् न गमि यामि।
तुम्हारे बिना मैं नहीं जाऊंगा।

६.अंतरा – बीच में
विद्यालय:महाविद्यालयं अंतरा मम गृहं अस्ति।
विद्यालय व महाविद्यालय के बीच में मेरा घर है।

७.अनु – पीछे
लक्ष्मण रामं सीतां च अनुगच्छति।
लक्ष्मण राम और सीता के पीछे चलता है।

८.धिक् – धिक्कार : मुर्खां धिक्।
मूर्खों को धिक्कार है।

उपपद तृतीया विभक्ति

१.सह, सार्धं, साकं – साथ
सीता रामेण सह वनं गच्छति। सीता राम के साथ वन जाती है।

२.समं – समान
त्वया समं कोपि सुन्दरम् नास्ति। तुम्हारे समान कोई भी सुंदर नहीं है।

३.अलं – मत
अलं कार्येण। काम मत करो।

४.अंग विकार की स्थिति में
सीमा पादेन खंज:। सीमा पैर से लंगड़ी है।
मंथरा चक्शुन्न काण:। मंथरा आँख से कानी थी।

क्रमश:

– आचार्य सन्दीप कुमार उपाध्याय

मैं आर्य समाजी कैसे बना?

आर्यसन्देश के समस्त पाठकों की सूचनार्थ है कि 'आर्य सन्देश' में एक नया स्तम्भ '**मैं आर्य समाजी कैसे बना**' प्रारम्भ किया गया है। इस स्तम्भ में उन सभी महानुभावों का परिचय प्रकाशित किया जाएगा जो किसी की प्रेरणा/विचारधारा से आर्य समाजी बने हैं। यदि आपके साथ भी कुछ ऐसा हुआ है तो आप भी अपना प्रेरक प्रसंग अपने फोटो के साथ हमें लिखें या aryasabha@ yahoo.com पर ईमेल करें। हमारा पता है–

'सम्पादक', आर्य सन्देश, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली–110001

ओ३म्

भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा के लिए उत्तम कागज़, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण
(द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)

सत्य के प्रचारार्थ

सत्यार्थ प्रकाश

सत्य के प्रचारार्थ

• प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 50 रु.	प्रचारार्थ 30 रु.	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
• विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 80 रु.	प्रचारार्थ 50 रु.	
• स्थूलाक्षर सजिल्द 20×30÷8	मुद्रित मूल्य 150 रु.		प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन

कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति **सत्यार्थ प्रकाश** के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें

आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph. :011-43781191, 09650622778
E-mail : aspt.india@gmail.com

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15–हनुमान् रोड, नई दिल्ली–110001
दिल्ली पोस्टल रजि.नं० डी.एल.(एन.डी.)–11/6071/2015–2017
नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक 1/2 दिसम्बर, 2016
पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं0 यू0(सी0) 139/2015–2017
आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 30 नवम्बर 2016

प्रथम पृष्ठ का शेष

बांग्लादेश और ....

तक एक माँ का दर्द व तड़प जानी चाहिए जब दर्द से तड़पती बेटी की हालत को देख एक माँ को भी उनसे कहना पड़ा था, "अब्दुल अली, मैं तुमसे रहम की भीख मांगती हूं जैसा तुमने कहा मैं मुसलमान न होने की वजह से अपवित्र हूं लेकिन मेरी बच्ची पर रहम करो। मैं तुम्हारे पांव पड़ती हूं, वह अभी 14 साल की है, बहुत कमजोर है। अपने अल्लाह के लिए कम से कम एक-एक कर ......"

अप्रैल, 2003 में एक किशोरी विभा सिंह स्कूल जाने के लिए घर से निकली थी जहाँ से उसका अपहरण कर लिया और अगले छह दिन तक खुलना शहर में उसे तीन अलग-अलग घरों में रखा गया जहां बड़ी निर्ममता से उसको शारीरिक यातनाएं दी गईं। इतना ही नहीं, गुंडों ने बर्बरता की सभी सीमाएं लांघीं और उसके शरीर के विभिन्न अंगों पर ब्लेड और चाकू से चीरा लगाया। न जाने इन देशों में ऐसी शर्मनाक कितनी घटनाएं सिर्फ धर्म के नाम पर होती हैं। लेकिन भारत के बहुत पढ़े लिखे और अत्यधिक शिक्षित कथित धर्मनिरपेक्षवादी, अभिव्यक्ति के नाम पर छाती कूटने वाली सेकुलर जमात को इन मासूमों की सिसकियाँ सुनाई नहीं देती। धर्मनिरपेक्षता का अर्थ होता है कि आपका धर्म से कोई लेना-देना नहीं है। लेकिन हमारे देश में धर्मनिरपेक्षता का अर्थ है मुस्लिमों के वोट और इन वोटों को पाने की खातिर आप अपने धर्म को गाली देकर तुष्टिकरण की सारी सीमाएं लांघ सकते हैं लेकिन इन देशों में हिन्दुओं पर हो रहे अत्याचार की आवाज नहीं उठा सकते।

– राजीव चौधरी

शोक समाचार

श्री सतीश बजाज नहीं रहे

आर्यसमाज जनकपुरी, ए ब्लाक, नई दिल्ली के युवा कोषाध्यक्ष श्री सतीश बजाज जी 53 वर्ष की आयु में 22 नवम्बर को निधन हो गया। वे लगभग 15 वर्षों से पूर्ण परिश्रम एवं समर्पणता के साथ सेवा कर रहे थे।

उनकी स्मृति में शान्ति यज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा 25 नवम्बर को आर्यसमाज ए ब्लाक जनकपुरी में सम्पन्न हुई। इस अवसर पर दिल्ली सभा के महामन्त्री श्री विनय आर्य, उप प्रधान श्री शिवकुमार मदान, आर्य केन्द्रीय सभा के उप प्रधान श्री विक्रम नरुला एवं स्थानीय आर्यसमाजों के अनेक पदाधिकारियों ने पहुंचकर श्रद्धासुमन अर्पित किए।

श्री विनोद अग्रवाल का निधन

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के अन्तर्गत आर्यसमाज आनन्द विहार, एल ब्लाक हरि नगर में संचालित गुरुविरजानन्द संस्कृतकुलम् के मन्त्री श्री विनोद अग्रवाल का अचानक हृदयघात होने के कारण 24 नवम्बर 2016 को मात्र 49 वर्ष की आयु में निधन हो गया। वे अपने पीछे पत्नी व दो बेटों को छोड़ गये हैं। उनकी स्मृति में शान्ति यज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा 27 नवम्बर को उनके निवास स्थान पर आयोजित हुई जिसमें दिल्ली की विभिन्न आर्य समाजों के पदाधिकारियों ने पहुंचकर अपने श्रद्धासुमन अर्पित किये।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्त्ता परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वे दिवंगत आत्माओं को सद्गति एवं शोक-संतप्त परिजनों को इस दारुण दु:ख को सहन करने की शक्ति, सामर्थ्य एवं उनके पदचिह्नों पर चलने की प्रेरणा प्रदान करे। -सम्पादक

आर्य समाज बिडला लाइन्स का
87वाँ वार्षिकोत्सव

आर्यसमाज बिडला लाइन्स का 87वां वार्षिकोत्सव 9 से 11 दिसम्बर तक आयोजित किया जा रहा है। इस अवसर पर सामवेदीय यज्ञ, भजन, प्रवचन एवं सम्मेलनों के आयोजन होंगे। प्रवचन डॉ. वेदपाल जी एवं भजन श्री शिवदेव आर्य जी के होंगे।

–योगेश कुमार आर्य, प्रधान

प्रतिष्ठा में,

आर्य समाज करोल बाग, नई दिल्ली का
88वाँ वार्षिकोत्सव

आर्य समाज करोल बाग, नई दिल्ली का 88वाँ वार्षिकोत्सव 1 से 4 दिसम्बर 2016 तक आयोजित किया जा रहा है। कार्यक्रम के अन्तर्गत आर्य महिला सम्मेलन, युवा सम्मेलन, महिला सशक्तिकरण सम्मेलन, भजन एवं आर्य सम्मेलनों का आयोजन किया जाएगा।

–विनयव्रत टण्डन, मंत्री

आर्य समाज अशोक विहार-1 का
43वाँ वार्षिकोत्सव

आर्यसमाज अशोक विहार फेज-1 का 43वां वार्षिकोत्सव 30 नवम्बर से 4 दिसम्बर तक आयोजित किया जा रहा है। समापन समारोह के अवसर पर वेद सम्मेलन का आयोजन 4 दिसम्बर को होगा। इस अवसर पर डॉ. वेदपाल जी एवं डॉ. महेश विद्यालंकार जी के प्रवचन होंगे।

–प्रेमकुमार सचदेवा, प्रधान

आर्य समाज सै. 3-6 रोहिणी एवं विजय विहार का 16वाँ वार्षिकोत्सव

आर्य समाज सै. 3, 4, 5, 6 रोहिणी एवं विजय विहार, दिल्ली का 16वाँ वार्षिकोत्सव दिनांक 16 से 18 दिसम्बर 2016 तक पॉकेट सी-9 पार्क, सैक्टर-5 रोहिणी (निकट सोम बाजार रोड) में आयोजित कर रहा है। इसके अन्तर्गत वैदिक यज्ञ, भक्ति भजन एवं आध्यात्मिक प्रवचन एवं आर्य महिला सत्संग के कार्यक्रम आयोजित किए जाएंगे।

–सुरेन्द्र चौधरी, मंत्री

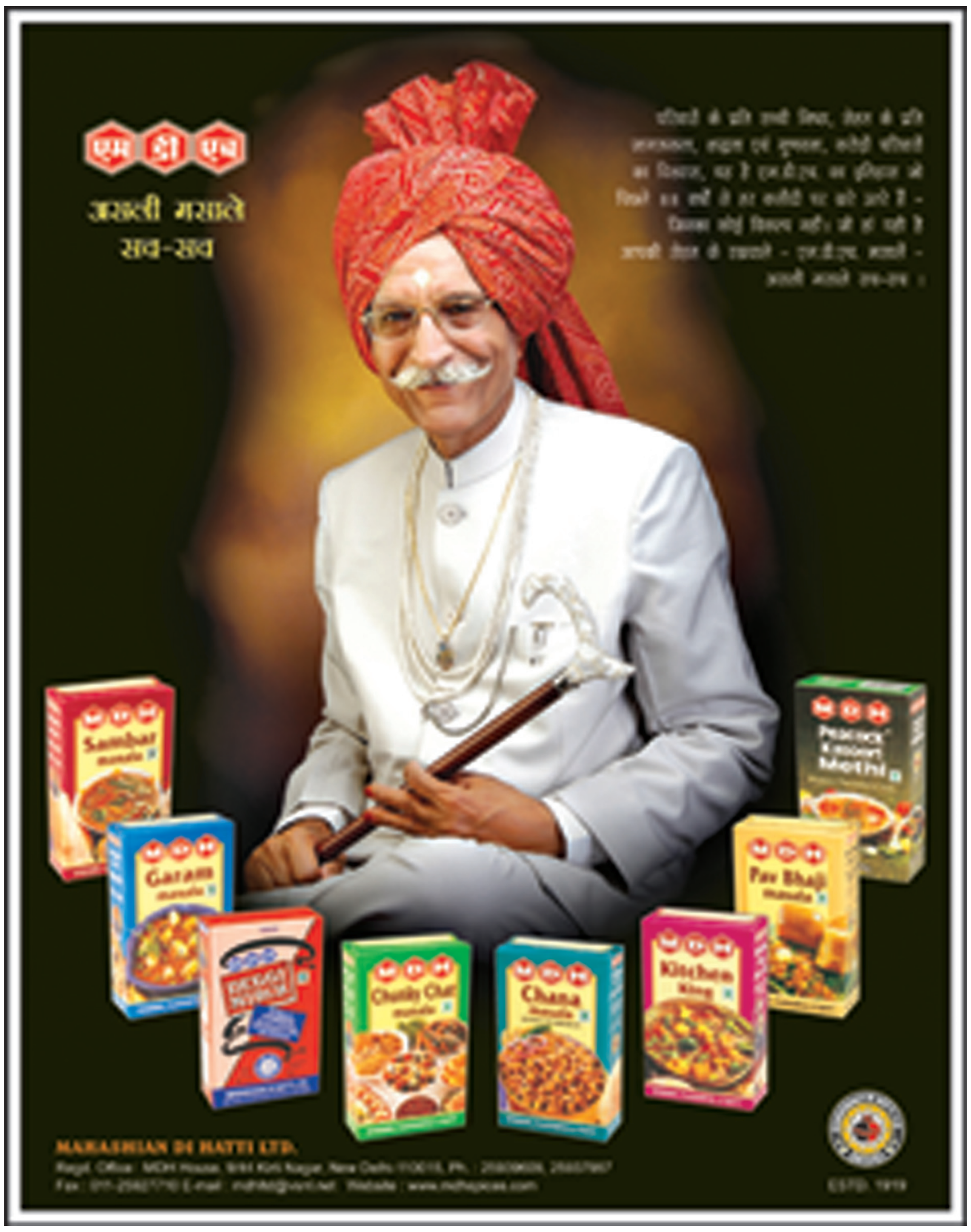

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा हरिहर प्रेस, ए-29/2, नरायणा औद्यो. क्षेत्र-1, नई दिल्ली-28 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-1; फोन : 23360150; 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com; Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित
सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ० ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह